गोपनीय

तांत्रोक्त प्रातः मानसिक गुरू पूजन

तांत्रोक्त प्रातः मानसिक गुरू पूजन सर्वथा गोपनीय दुर्लभ एवं विलक्षण है इसके लिए स्नान, आसन, दीप आदि की आवश्यकता नहीं अपितु सुबह उठते ही अपनी शय्या पर बैठे बैठे ही इस गुरू पूजन को सम्पन्न कर लेना चाहिये ।

इसके आश्चर्यजनक परिणाम देखने को मिले है, नित्य प्रातः उठते ही बिस्तर पर बैठे बैठे ही इस प्रकार का मानसिक पूजन करने से शिष्य को स्वतः ही गुरू की सारी सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं, वह सिद्ध बन कर गुरू का अत्यन्त प्रिय होकर सिद्धाश्रम प्रवेश कर लेता है ।

गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करने के बाद ही, शिष्य या साधक प्रातःकाल तांत्रिक रूप से मानसिक गुरू पूजा करने का अधिकारी होता है, प्रातःकाल पांच बजे उठकर साधक अपनी शैया पर ही पद्मासन से बैठ कर भूत शुद्धि करने के बाद गुरूदेव का स्मरण करें ।

शैवागम में कहा है ।

देह-कारण-भूतानां भूतानां यद्-शोधनं ।
अवयव-ब्रह्म-संयोगात् भूत शुद्धिरियं मता ।।
भूत-शुद्धि विना कर्म जप-होमार्चनादिकं ।
भवेत तु निष्फलं सर्व प्रकारेणाप्यनुष्ठितं ।।

अर्थात् भूत शुद्धि के बिना जप होम पूजन मन्त्र जप आदि का कोई फल नहीं होता, अतः गुरूदेव का ध्यान करने से पहले शरीर और मन को शुद्ध कर लेना चाहिए, शरीर को शुद्ध करने का उपाय है,–भूत सिद्धि ।

"ॐ ह्रीं" का १०८ बार जप करने से भूत शुद्धि हो जाती है, इसके बारे में कहा गया है–

ज्योतिर्मन्त्रं महेशानि, अष्टोत्तर-शतं जपेत् ।
एतद्-ज्ञान प्रभावेण भूत-शुद्धे फलं लभेत ।।

यह भूत सिद्धि साधक को प्रातः उठ कर अपनी शैया पर बैठे-बैठे ही कर लेनी चाहिए ।

भूत सिद्धि के बाद चौर मन्त्र-न्यास करना चाहिए "वर्ण विलास तन्त्र" में कहा है–

चौर मन्त्रं महा मन्त्रं पंचाशत् गण तोषणं ।
चौर मन्त्रं विना भद्रे शान्ति स्वस्त्ययनं कुतः ।।

Scanned by CamScanner

अर्थात् ५० विभिन्न गण देवताओं को संतुष्ट करने वाला चौर मन्त्र ही महा मन्त्र है, अतः पूर्णता प्राप्ति के के लिए चौर मन्त्र आवश्यक है।

चौर मन्त्र जप न करने से सभी पूजा पाठ व्यर्थ हो जाते है, अतः गुरू चिन्तन प्रारम्भ करने से पूर्व चौर मन्त्र द्वारा शरीर के समस्त छिद्रों को द्वार के समान बन्द कर देने चाहिए, जिससे ५० गण उस जप के फल को नष्ट न कर सके।

चौर मन्त्र के लिए शरीर के दस द्वारों पर क्रमशः ध्यान एकाग्र करते हुए, बीज मन्त्र का यथा संख्या अनुसार जप करें।

	शरीर का स्थान	बीज मन्त्र	जप संख्या
१	हृदय	क्रों	१० बार
२	दोनों नेत्र	ह्रीं ह्रीं १०-१० बार	२० बार
३	दोनों कान	ह्रीं ह्रीं १०-१० बार	२० बार
४	दोनों नाक	हूं हूं १०-१० बार	२० बार
५	मुख	स्त्रीं स्त्रीं	१० बार
६	नाभि	क्लीं	१० बार
७	लिग-मूल	हसौः	१० बार
८	गुह्य	क्लुं	१० बार
९	भ्रू-मध्य	हूं	१० बार
१०	सिर	ह्रीं स्त्री क्लीं	१० बार

इस प्रकार चौर मन्त्र का न्यास कर गुरूदेव का ध्यान करें, भैरव तन्त्र में बताया गया है–

अथातः प्रातरुत्थाय शय्यास्थः सुसमाहितः।
शिरस्थ-कमले ध्यायेत् स्व-गुरूं शिव-रूपिणम्॥

अर्थात् सिर पर स्थित सहस्र दल कमल के मध्य में हंस पीठ के ऊपर गुरूदेव विराजमान है, जिनका गौर शरीर प्रसन्न मुख मण्डल शान्त मूर्ति, शक्ति के साथ, शिव स्वरूप है।

फिर अपनी नाभि पर दाहिने हाथ के ऊपर बांया हाथ रख कर गुरूदेव का ध्यान करें, "तारा तन्त्र" में बताया गया है।

स्व नाभौ दक्षिणं हस्ते वाम-हस्तं निधाय च।
भावयेत् तु सहस्रारे श्री गुरूं शक्ति-संयुतम्॥

गुरू ध्यान

'काली कुलामृत तन्त्र' में गुरूदेव का ध्यान बताया है-

ॐ वराभय करं शान्तं शुक्ल-वर्ण सशक्तिकम्।
ज्ञानानन्द-मयं साक्षात् सर्व-ब्रह्म-स्वरूपकम्॥

अर्थात् श्वैत वर्ण वाले गुरूदेव साक्षात ब्रह्म स्वरूप और ज्ञान मूर्ति है, वे अपनी शक्ति के साथ साधक के सहस्रार में स्थित हो कर साधक को एक हाथ से वर तथा दूसरे हाथ से अभय प्रदान कर रहे है।

गुरूदेव का अन्य प्रकार का ध्यान इस प्रकार है-

ध्यायेच्छिरसि शुक्लाब्जे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरू।
श्वेताम्बर-परिधानं श्वेत माल्यानुलेपनं॥
वराभय-करं शान्तं करूणामय-विग्रहं
वामेनोत्पल-धारिण्या शक्त्यालिंगितं विग्रहं
स्मेराननं सुप्रसन्नं साधकाभीष्ट-दायकं॥

कुछ साधकों के स्त्री गुरू होते है, अतः उनको चाहिए कि वे गुरू का ध्यान इस प्रकार से करें।

सहस्रमे महा-पद्मे किंजल्क-गण-शोभिते।
प्रफुल्ल-पद्म-पत्राक्षीं घन-पीन पयोधराम्॥
प्रसन्न वदनां क्षीण मध्यां ध्यायोच्छिवां गुरू।
पद्मराग-समाभासां रक्त-वस्त्र-सुशोभनां॥
रक्त-कंकण-पाणि च रक्त नूपुर-शोभितां।
शरद्-विन्दु-प्रतीकाश-रक्तोद्भासित–कुण्डला॥
स्व-नाथ-वाम-भागस्थां वराभय-कराम्बुजाम्।

Scanned by CamScanner

इसके बाद मानस गुरू पूजन करें, "महानिर्वाण तन्त्र" में बताया गया है।

एवं ध्यात्वा कुलेशानि मानसैरूपचार कैः।
पूजयित्वा जपेन् मन्त्रो वाग्भवं बीजमुत्तमं ।।
यथां-शक्ति जपं कृत्वा समर्प्य दक्षिणे करे।
ततस्तु प्रणमेद् धीमान् मन्त्रे नामेन सद्गुरूम्।

शिष्य को शैया पर बैठे बैठे ही गन्ध, पुष्प, धूप दीप, नैवैद्य और तांबूल-इन छः उपचारों से संक्षिप्त पूजा करनी चाहिए, परन्तु प्रातः शैया पर बैठ कर इन सब उपचारों से पूजन करना संभव नहीं है, अतः पंच भूतों के बीज मन्त्रों द्वारा पंच उपचारों की कल्पना कर गुरूदेव की पूजा करनी चाहिए।

मानस गुरू पूजा

पृथ्वी को गन्ध अर्थात् चन्दन स्वरूप माने, पृथ्वी का बीज मन्त्र है "लं" हाथ की कनिष्ठा उंगली को पृथ्वी तत्व कहते है, अतः दोनों हाथों की कनिष्ठा उंगली को अंगूठे से लगाकर "लं" बीज का उच्चारण करते हुए, गुरूदेव को गन्ध समर्पित करें।

ॐ ऐं कनिष्ठाभ्यां लं पृथिव्यात्मकं गन्ध सशक्तिकं श्री नारायणदत्त श्री गुरवे समर्पयामि नमः

इसी प्रकार गन्ध धूप, पुष्प, दीप नेवैद्य और तांबूल समर्पित करें, इसका प्रकरण इस प्रकार है–

१- दोनों हाथों के अंगुष्ठ और कनिष्ठांगुलियों के योग से गन्ध समर्पण करें।

मन्त्र

ऐं कनिष्ठाभ्यां लं पृथिव्यात्मकं गन्ध
सशक्तिकं श्री गुरवै समर्पयामि नमः।

२- दोनों हाथों के अंगुष्ठ और तर्जनी के योग से पुष्प समर्पण करें।

मन्त्र

ऐं अंगुष्ठाभ्यां हं आकाशात्मकं पुष्प सशक्तिकं:
श्री गुरुवै समर्पयामि नमः

३- दोनों हाथों की तर्जनी और अंगुष्ठ के योग से धूप समर्पण करें।

मन्त्र

ऐं तर्जनीभ्यां यं वाग्वात्मकं धूपं सशक्तिकं:
श्री गुरुवै समर्पयामि नमः

४- दोनों हाथों की मध्यमा और अंगुष्ठ के योग से दीप दिखाएं।

मन्त्र

ऐं मध्यमाभ्यां रं हृदयात्मकं दीपं सशक्तिकं:
श्री गुरुवै समर्पयामि नमः

५- दोनों हाथों की अनामिका और अंगुष्ठ के योग से नेवैद्य दे।

मन्त्र

ऐं अनामिकाभ्यां वं अमृतात्मकं नेवैद्य सशक्तिकं:
श्री गुरुवै समर्पयामि नमः

६- दोनों हाथ जोड़ कर ताम्बूल प्रदान करें।

मन्त्र

ऐं करतल-करपृष्ठाभ्यां सर्वात्मकं ताम्बूलं सशक्तिकं
श्री गुरुवै समर्पयामि नमः

इस प्रकार छः उपचारों से पूज्य गुरूदेव का पूजन कर कर-न्यास करें।

	कर न्यास	अंग न्यास
श्रीं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
गुं	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा

Scanned by CamScanner

र	मध्यामाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
वै	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
न	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
मः	अस्त्राय फट्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्

इसके बाद इसी प्रकार गुरू शब्द के "गकार" से भी कर न्यास और अंग न्यास करें।

	कर न्यास	अंग न्यास
गां	अंगुष्ठाभ्या नमः	हृदयाय नम.
गीं	तर्जनोभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
गूं	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
गै	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
गौं	कनिष्ठकाभ्यां वौषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
गः	अस्त्राय फट्	करतल-कर-पृष्ठाभ्यां फट्

इसके बाद माला से या उंगलियों से गणना करते हुए, १०८ बार गुरू मन्त्र का उच्चारण करे।

गुरू मन्त्र

ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरूभ्यौ नमः

इसके बाद हाथ जोड़ कर गुरू पंक्ति को नयस्कार करें

वामे–गुरूभ्यौतमः, पर गुरूभ्यौनमः, परापर गुरूभ्यौ नमः दक्षिणे–गणेशाय नमः
मध्ये–ऐं श्रीं गुरुवै नमः

इसके वाद "ऐं" गुरू बीज का १०८ बार जप कर गो-योनि-मुद्रा से जप-समर्पण करें।

दाये या बाये हाथ को मुट्ठी बांधने पर कनिष्ठा उंगली के मूल के नीचे के भाग में जो योनि की आकृति होती है, वही गौ-योनि-मुद्रा कही जाती है।

जप समर्पण गुरू के दांये हाथ में निम्न मन्त्र के द्वारा करना चाहिए।

ॐ गुह्यति-गुह्य गोप्ता त्वं गृहणास्मत् कृतं जपम्
सिद्धिर्भवतु मे देव, त्वत् प्रसादान्महेश्वर ।।

फिर "ऐं" मन्त्र से प्राणायाम कर गुरुदेव को नमस्कार करें और नमस्कार करते हुए उच्चारण करें।

अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवै नमः ।।

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं मतः ।
तत्व-ज्ञानं परं नास्ति तस्मै श्री गुरवै नमः ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया ।
चक्ष रून्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवै नमः ।।

नमोऽस्तु गुरवै तस्मै इष्ट-देव-स्वरूपिणे ।
यस्य वागमृतं हन्ति विषं संसार-संज्ञकम् ।।

भव-पाश-विनाशाय ज्ञान-दृष्टि-प्रदर्शिने ।
नमः सद्गुरवे तुभ्यं भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिने ।।

नराकृति-परब्रह्म-रूपायाज्ञान-हारिणे ।
कुल–धर्म-प्रकाशाय तस्मै श्री गुरवै नमः ।।

इस प्रकार गुरुदेव को श्रद्धायुक्त नमस्कार कर वाग्भव बीज "ऐं" द्वारा तीन बार प्राणायाम करे और फिर निम्न लिखित गुरू स्तोत्र का पाठ करे।

श्री गुरू-स्तोत्र

ॐ नमः श्री नारायण। श्री महादेव्युवाच–

गुरोर्मन्त्रस्य देवस्य धर्मस्य तस्य एव वा ।
विशेषस्तु महादेव, तद् ववस्व दयानिधे ।।

श्री महादेव उचाव–

जीवात्मानं यदमात्मानं दानं ध्यानं योगो ज्ञानम् ।
उत्कल-काशी-गंगा-मरणं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।१।

प्राणं देहं गेहं राज्य स्वर्गं भोगं योगं मुक्तिम् ।
भार्यामिष्टं पुत्रं मित्रं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।२।

Scanned by CamScanner

वानप्रस्थं यति-विध-धर्म पारमहास्यं भिक्षुक-चरितं साधौः सेवां बहु-सुख-मुक्ति न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।३।

विष्णो भक्ति पूजन-रिक्तं वैष्णव-सेवां मातरि भक्तिम् विष्णोरिव पितृ-सेवन-योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।४।

प्रत्याहारं चेन्द्रिय-यजनं प्राणायामं न्यास-विधानं । इष्टे पूजा जप-तप-भक्तिर्न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं ।५।

काली दुर्गा कमला भुवना त्रिपुरा भीमा बगला पूर्णा श्रीमातंगी धूमा तारा न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं ।६।

मात्स्यं कौर्म श्रीवाराहं नरहरि-रूपं वामन-चरितम् नर-नारायण-चरितं योगं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।७।

श्रीभृगुदेवं श्रीरघुनाथं श्रीयदुनाथं बौद्धं कल्क्यम् । अवतारा दस वेद-विधान न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।८।

गंगा काशी कांची द्वारा माया योध्यावन्ती मथुरा । यमुना रेवा पुष्कर-तीर्थं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकं ।९।

गोकुल-गमनं गोपुर-रमणं श्रीवृन्दावन-मधुपुर-रटनं एतत् सर्वं सुन्दरी, मानर्नं गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।१०।

तुलसी-सेवा हरिहर-भक्तिः गंगासागर-संगम-मुक्तिः किं परमधिकं कृष्ण भक्तिर्नं गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।११।

एतत् स्तोत्रं पठति च नित्यं मोक्ष-ज्ञानी सो पि च धन्यम् ।
ब्रह्माण्डान्तर्यद् यद्-ध्येयं न गुरोरधिकं न गुरोरधिकम् ।१२।

इति वृहद्-विज्ञान-परमेश्वर-तन्त्रे त्रिपुरा-शिव सम्वादे श्रीगुरो स्तोत्रम् ।।

श्री गुरु-स्तव

नमस्तुभ्यं महा-मन्त्र-दायिने शिव-रूपिणे ।
ब्रह्म-ज्ञान-प्रकाशाय संसार-दुःख तारिणे ।१।
अति-सौम्याय विद्याय वीराया ज्ञान-हारिणे ।
नमस्ते कुल-नाथाय कुल-कौलिन्य-दायिने ।२।
शिव-तत्व-प्रकाशाय ब्रह्म-तत्व-प्रकाशिने ।
नमस्ते गुरवै तुभ्यं साधकाभय-दाहिने ।३।
अनाचाराचार-भाव-बोधाय भाव हेतवे ।
भावाभाव-विनिर्मुक्त-मुक्ति-दात्रे नमो नमः ।४।
नमस्ते सम्भवे तुभ्यं दिव्य-भाव-प्रकाशिने ।
ज्ञानानन्द-स्वरूपाय विभवाय नमो नमः ।५।
शिवाय शक्ति-नाथाय सच्चिदानन्द रूपिणे ।
काम-रूपाय कामाय काम-केलि-कलात्मने ।६।
कुल-पूजोपदेशाय कुलाचार-स्वरूपिणे ।
आरक्त-निज-तच्छक्ति-वाम-भाग-विभूतये ।७।
नमस्ते स्तु महेशाय नमस्ते स्तु नमो नम. ।
इदं स्तोत्रं पठेन्नित्यं साधको गुरु-दिङ्मुखः ।८।
प्रातरुत्थाय देवेशि, ततो विद्या प्रसीदति ।
कुल-सम्भव-पूजायामादो यो न पठेदिदम् ।९।
विफला तस्य पूजा स्यादभिचाराय कल्प्यते ।
इतिकुब्जिका-तन्त्रे गुरु-स्तोत्रं समाप्तम् ।

इस प्रकार तांत्रोक्त गुरू मानसिक पूजन करने से निश्चय ही गुरू साधना सिद्ध होती है, और शिष्य वह सब कुछ प्राप्त कर लेता है, जो कि गुरू के पास ज्ञान साधना और सिद्धियां होती है।

वास्तव में ही यह मानसिक गुरू पूजन अपने आप में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण गोपनीय और उच्चस्तरीय है, इस गुरू पूजन के लिए स्नान करने या आसन पर बैठने की जरूरत नहीं है यह तो प्रातःकाल उठकर अपनी शैया पर बैठे बैठे ही इस साधना को सम्पन्न कर लेनी चाहिए जिससे उसे जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त हो।

Scanned by CamScanner